Regarding reinstallation of Piprawha Buddhist relics in Kapilavastu Museum, Siddharth Nagar, Uttar Pradesh-Laid

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज) : मैं भारत सरकार को पिपरहवा बौद्ध अवशेषों के संरक्षण हेतु किए गए ऐतिहासिक प्रयासों के लिए धन्यवाद प्रकट करता हूँ । सिद्धार्थनगर के पिपरहवा में 1898 में विलियम क्लैक्स्टन पेप्पे द्वारा प्राप्त ये अवशेष करोड़ों बौद्ध अनुयायियों के लिए अमूल्य धरोहर हैं और भारत की करुणा, शांति व अहिंसा की परंपरा के प्रतीक भी । मई 2025 में जब ये अवशेष हांगकांग के ?Sotheby?s? में नीलामी हेतु सूचीबद्ध हुए, यह भारत की सांस्कृतिक अस्मिता के लिए चुनौती थी । ऐसे क्षण में प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकार ने त्वरित हस्तक्षेप कर नीलामी रोकते हुए इन्हें पुनः भारत लाकर विरासत संरक्षण का उदाहरण प्रस्तुत किया । सरकार ने आगे इन अवशेषों को भूटान की प्रदर्शनी में भेजकर बौद्ध सांस्कृतिक कूटनीति, भारत-भूटान मैत्री और वैश्विक सॉफ्ट पावर को नई दिशा दी । इससे विरासत संरक्षण में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका और सुदृढ़ हुई है । अंत में, मेरा आग्रह है कि इन पावन अवशेषों को सिद्धार्थनगर स्थित कपिलवस्तु संग्रहालय में पुनः स्थापित किया जाए, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था, पर्यटन और बौद्ध परिपथ को गति मिले तथा सिद्धार्थनगर विश्व बौद्ध मानचित्र पर और प्रमुख रूप से स्थापित हो सके ।